वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 4 | जुलाई से दिसम्बर 2012 | अंक – 2

अंतर्राष्ट्रीय पॉपलर आयोग का 24वां सत्र

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् एवं वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में अंतर्राष्ट्रीय पॉपलर आयोग का 24वां सत्र एवं उसकी कार्यकारी समिति की 46वीं बैठक अक्टूबर 2012 में आयोजित की गई। आयोजन के पूर्व एवं पश्चात विदेशी प्रतिनिधियों के लिए दौरों का आयोजन किया गया जिनमें उन्हें कृषिवानिकी क्षेत्रों, पौधशालाओं तथा फैक्ट्रियों का भ्रमण कराया गया। आयोजन के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र एक साथ संचालित किए गए। राष्ट्रीय पॉपलर आयोग की बैठक भी इस दौरान आयोजित की गई, जिसमें इसका कार्यक्षेत्र बढ़ाते हुए इसके नाम में परिवर्तन कर इसे ''पॉपलर, विलो और अन्य अल्प अवधि फसल राष्ट्रीय आयोग'' के नाम से पुनर्नामित कर दिया गया, जिसका सचिवालय वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में होगा। इस आयोजन में 23 देशों के 227 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय पॉपलर आयोग का 24वां सत्र

वन आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति पर राष्ट्रीय प्रतिवेदन का श्रीमती जयंती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री द्वारा विमोचन

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा राष्ट्रीय परामर्शी प्रक्रिया द्वारा वन आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति पर राष्ट्रीय प्रतिवेदन

वन आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति पर राष्ट्रीय प्रतिवेदन का माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री द्वारा विमोचन

तैयार किया गया। इस प्रतिवेदन का विमोचन श्रीमती जयंती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री द्वारा दिनांक 22 दिसम्बर 2012 को चेन्नई में किया गया। माननीय मंत्री ने इस अपने प्रकार के पहले प्रतिवेदन को तैयार करने पर संस्थान को बधाई दी। यह प्रतिवेदन विश्व खाद्य संगठन द्वारा 2013 में प्रकाशित किए जाने वाले ''विश्व वन आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति प्रतिवेदन'' का भारत अध्याय बनेगा।

भा.वा.अ.शि.प. के शासक मण्डल की बैठकें

भा.वा.अ.शि.प. के शासक मण्डल की 46वीं बैठक डॉ. टी. चटर्जी, सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की अध्यक्षता में दिनांक 24 अगस्त 2012 को नई दिल्ली

भा.वा.अ.शि.प. के शासक मण्डल की 46वीं बैठक

में आयोजित की गई। मण्डल ने कार्य सूची के विभिन्न मदों पर विस्तार से चर्चा की और भा.वा.अ.शि.प. कल्याण समिति के गठन तथा वन आधारित शिल्पियों के उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराने के भा.वा.अ.शि.प. के प्रयासों की सराहना की। मण्डल ने भा.वा.अ.शि.प. की मानव संसाधन विकास नीति का अनुमोदन किया और उसे मंत्रालय को प्रेषित करने की अनुशंसा की।

भा.वा.अ.शि.प. के शासक मण्डल की 47वीं बैठक दिनांक 20 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. टी. चटर्जी, सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने की। बैठक के दौरान भा.वा.अ.शि.प. का वार्षिक प्रतिवेदन 2011–12 तथा परीक्षित वार्षिक लेखा 2011–12 पर विचार–विमर्श के बाद इसे भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की वार्षिक सामान्य बैठक के अनुमोदन के लिए अनुशंसित कर दिया गया।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने रोम में कोफो 2012 बैठक के एक सत्र की अध्यक्षता की

रोम में विश्व वन सप्ताह के दौरान आयोजित कोफो 2012 बैठक ''भू उपयोग निर्णयों में वानिकी सुदृढ़ीकरण'' सत्र की दिनांक 25 सितम्बर 2012 को डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने अध्यक्षता की। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) और श्री पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (प.प्र.) सम्मिलित थे।

डॉ.वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. रोम में कोफो 2012 बैठक के एक सत्र की अध्यक्षता करते हुए

श्री शैवाल दासगुप्ता, उ.म.नि. (वि.) और श्री पंकज अग्रवाल , स.म.नि. (प.प्र.)

भा.वा.अ.शि.प. और चीनी वानिकी अकादमी के बीच समझौता ज्ञापन

वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग विकसित करने के लिए चीनी वन अकादमी एवं भा.वा.अ.शि.प. के मध्य एक समझौता ज्ञापन किया गया। डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा डॉ. जेन्ग शाउगोन्ग, अध्यक्ष, चीनी वानिकी अकादमी ने समझौता ज्ञापन पर दिनांक 31 अगस्त 2012 को बीजिंग में हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन सागौन, शीशम, चंदन और यूकेलिप्टस इत्यादि महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए सुधार कार्यक्रम और बांस की खेती और औद्योगिक बांस उत्पादों के विकास पर छत्र कार्य योजना विकसित करेगा।

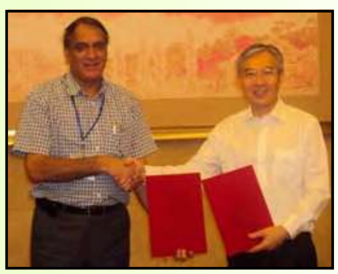

भा.वा.अ.शि.प. और चीनी वानिकी अकादमी के बीच समझौता ज्ञापन

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कॉप –11, हैदराबाद में ''जलवायु परिवर्तन और जैवविविधता – संरक्षण और अनुकूलन'' पर एक सत्र की अध्यक्षता की

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. कॉप–11 में '' जलवायु परिवर्तन और जैवविविधता–संरक्षण और अनुकूलन'' पर एक सत्र की अध्यक्षता करते हुए

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कॉप –11, हैदराबाद में दिनांक 17 अक्टूबर 2012 को ''जलवायु परिवर्तन और जैवविविधता – संरक्षण और अनुकूलन'' पर एक सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. बहुगुणा ने अध्यक्ष के रूप में सत्र का सारांश करते हुए सीमांत वन क्षेत्र के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा खाद्य एवं जल सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जैवविविधता संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन को समेकित करने और जैवविविधता सरंक्षण को समुदायों विशेषकर वे जो कि वन सीमांत प्रदेशों में निवास करते हैं, जो कि लगभग 30 करोड़ लोगों की आजीविका को आधार देता है, से संयोजित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

''फॉरेस्ट बायोडाइवर्सिटी इन इंडिया'' और ''फॉरेस्ट सेक्टर रिपोर्ट इंडिया 2010'' का विमोचन

भा.वा.अ.शि.प. ने भारत की वन जैवविविधता के अद्वितीय कोष को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से ''फॉरेस्ट बायोडाइवर्सिटी इन इंडिया'' के नाम से एक कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन किया है। उच्च गुणवत्ता के रंगीन छायाचित्रों से सुसज्जित यह अद्वितीय पुस्तक भारत के विभिन्न जैवविविधता स्थलों, वन प्रकारों, परिवर्तन के कारकों पर प्रकाश डालती है।

''फॉरेस्ट सेक्टर रिपोर्ट इंडिया 2010'' का विमोचन

परिषद् ने वानिकी के छः महत्वपूर्ण उपखंडों पर 'फॉरेस्ट सेक्टर रिपोर्ट इंडिया 2010'' नामक सचित्र पुस्तक का प्रकाशन भी किया है। उपर्युक्त दोनों पुस्तकों का विमोचन श्रीमती जयंती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 17 अक्टूबर 2012 को कॉप – 11 के दौरान हैदराबाद में किया गया।

प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने दिनांक 7 और 8 नवम्बर 2012 को ''द सिगनीफिकेंस एण्ड स्कोप ऑफ रेड /रेड प्लस फॉर इंडियाज फॉरेस्ट्स'' पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित इस कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के भारतीय वन सेवा के 16 अधिकारियों ने भाग लिया।

''द सिगनीफिकेंस एण्ड स्कोप ऑफ रेड /रेड प्लस फॉर इंडियाज फॉरेस्ट्स'' पर प्रशिक्षण कार्यशाला के सहभागी व आयोजक

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने दिनांक 19 से 23 नवम्बर 2012 की अवधि में ''क्लाइमेट चेंज एण्ड कार्बन मिटिगेशन'' पर कार्यशाला का आयोजन किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न शासकीय संगठनों के 19 वैज्ञानिकों/प्रौद्योगविदों ने भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 1 जुलाई से 31 दिसम्बर 2012 की अवधि के दौरान विभिन्न ख्यातिलब्ध संस्थानों यथा भारतीय वन प्रबंधन संस्थान, भोपाल; सोफिस्टीकेटिड इंसट्रूमेंटेशन सेंटर फॉर अपलाइड रिसर्च एण्ड टेस्टिंग, अहमदाबाद; पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना इत्यादि के सहयोग से ''केपेसिटी बिल्डिंग ऑफ साइंटिफिक/मेनेजेरियल केडर/रिसर्च स्टाफ ऑफ द काउंसिल'' पर पांच प्रशिक्षणों का आयोजन किया। अनुसंधान सहायता कर्मियों के लिए दो प्रशिक्षणों का आयोजन उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में किया गया। इन प्रशिक्षणों में 68 वैज्ञानिकों/ अनुसंधान सहायता कर्मियों ने भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 17 से 21 दिसम्बर 2012 तक ''क्लाइमेट चेंज, फॉरेस्ट इकोसिस्टम एण्ड बायोडाइवर्सिटी : वलनरेबिलटीज एण्ड एडपटेशन स्ट्रेटजीज'' पर

प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करते महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

शासकीय खंडों में कार्यरत वैज्ञानिकों और प्रौद्योगविदों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में 22 वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों ने भाग लिया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने दिनांक 13 से 17 अगस्त 2012 को ''डेवलपमेंट ऑफ ग्रीन बेल्ट्स'' पर विभिन्न संस्थानों के 8 सहभागियों के लिए एक प्रशिक्षण आयोजित किया। संस्थान में 3 से 7 दिसम्बर 2012 की अवधि में ''असेस्मेंट ऑफ स्वाइल क्वालिटी इंडिकेटर्स'' पर भी विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों के लिए एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने ''एप्लीकेशन ऑफ जी.पी.एस इन फॉरेस्ट्री'' पर दिनांक 31 जुलाई और 1 अगस्त 2012 को नागालैण्ड वन विभाग के 25 अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन किया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने ''फॉरेस्ट जेनेटिक रिसोर्स मैनेजमेंट'' पर दिनांक 10 से 14 सितम्बर 2012 को भारतीय वन सेवा के अधिकारियों के लिए एक पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में भारतीय वन सेवा के 25 अधिकारियों ने भाग लिया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने ''सांइटिफिक लेक कल्टिवेशन फॉर सस्टेनेबल लाइवलीहुड'' पर दिनांक 17 से 19 अगस्त 2012 को भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिकों

''सांइटिफिक लेक कल्टिवेशन फॉर सस्टेनेबल लाइवलीहुड'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

और अनुसंधान अधिकारियों/अनुसंधान कर्मियों हेतु तथा दिनांक 18 से 22 सितम्बर 2012 तक 23 प्रगतिशील किसानों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, रांची द्वारा प्रायोजित थे।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर ने कर्नाटक वन विभाग के कर्मियों के लिए दिनांक 21 से 24 अगस्त 2012 के दौरान ''कल्टिवेशन एण्ड नर्सरी प्रैक्टिसेस ऑफ सैंडल वुड एण्ड मीलिया डुबिया'' पर प्रशिक्षण –सह–कार्यशाला का आयोजन किया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कृषि विज्ञान केंद्र रिकोंग पीओ के सहयोग से दिनांक 4 अक्टूबर 2012 को समशीतोष्ण औषधीय पौधों को जनसाधारण के मध्य लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शन का आयोजन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला/सम्मेलन/बैठक इत्यादि में भा.वा.अ.शि.प. की भागीदारी

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.; डॉ. पी.पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं, देहरादून; डॉ. एस.सी.जोशी, निदेशक, का.वि.प्र.सं., बंगलौर; श्री ए.एस. रावत, प्रमुख, वनवर्धन प्रभाग, व.अ.सं., देहरादून और श्री सुधीर कुमार, वैज्ञानिक–एफ/विशेष निदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 31 अगस्त से 3 सितम्बर 2012 तक चीन में ए पी ए एफ आर आई की छठी सामान्य सभा एवं ''इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन सेस्टेनेबल मेनेजमेंट ऑफ ट्रोपिकल फॉरेस्ट्स (आई एस एस एम टी एफ)'' में भाग लिया।

डॉ. पी.पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं, देहरादून ने 28 और 29 सितम्बर 2012 को थाईलैण्ड में ''एक्सपर्ट ग्रुप मीटिंग ऑन नेशनल फॉरेस्ट फाइनेंस स्ट्रेटेजी'' में भाग लिया।

डॉ. एन.एस बिष्ट, निदेशक (अं.स.), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 10 और 11 अक्टूबर 2012 को भूटान में सार्क क्षेत्र के वानिकी अनुसंधान संस्थानों/केंद्रों के प्रमुखों की बैठक में भाग लिया।

डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक एवं डॉ. ए. कार्तिकेयन, वैज्ञानिक – डी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने 3 से 5 जुलाई 2012 तक मलेशिया में 'पुनरूद्धार, पुनर्प्राप्ति और पुनर्स्थापन – एक अधिक हरित एशिया की ओर' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने 12 से 14 सितम्बर 2012 तक मलेशिया में ''रीजनल वर्कशॉप ऑन फॉरेस्ट जेनेटिक्स रिसोर्सिस इन एशिया'' में भाग लिया।

डॉ. वी.आर.आर सिंह, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला; डॉ. दिनेश कुमार, वैज्ञानिक – एफ, व.अ.सं., देहरादून और डॉ. ओमबीर सिंह, वैज्ञानिक – डी, व.अ.सं., देहरादून ने 30 जुलाई से 3 अगस्त 2012 तक वानिकी संस्थान, नेपाल के पी.एच.डी. छात्रों के क्षेत्र कार्य का निरीक्षण करने के लिए नेपाल का दौरा किया।

कार्यशालाएं/बैठकें इत्यादि

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने स्लेम परियोजना के अंतर्गत एक संवादात्मक कार्यशाला का दिनांक 16 और 17 जुलाई 2012 को आयोजन किया। कार्यशाला में पर्यावरण

स्लेम परियोजना के अंतर्गत एक संवादात्मक कार्यशाला

एवं वन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों, स्लेम परियोजना के भागीदारों, भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के नोडल अधिकारियों और विश्व बैंक के कर्मियों सहित विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने दिनांक 3 और 4 अक्टूबर 2012 को ''सस्टेनेबल मैनेजमेंट एण्ड लाइवलीहुड अपोर्चुनिटीज'' पर एक कार्यशाला का

''सस्टेनेबल मेनेजमेंट एण्ड लाइवलीहुड अपोर्चुनिटीज'' पर कार्यशाला

आयोजन किया। कार्यशाला का उद्‌घाटन डॉ. अजीज कुरैशी, माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड ने किया। डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., डॉ. पी.पी भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं, देहरादून तथा अन्य उच्चाधिकारी एवं वैज्ञानिक उद्‌घाटन सत्र में उपस्थित थे।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने वन विज्ञान केंद्र एवं कृषि विज्ञान केंद्र की नेटवर्किंग के अंतर्गत आयोजित कृषि विज्ञान केंद्र, विल्लूपुरम,

वृक्ष उत्पादकों की संवादात्मक बैठक

तिनदिवानम, तमिलनाडु में दिनांक 10 दिसम्बर 2012 को वृक्ष उत्पादकों की संवादात्मक बैठक तथा वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान द्वारा विकसित कैज्वरिना पौधों का थेन के चक्रवात प्रभावित किसानों में वितरण का उद्‌घाटन किया।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. की अध्यक्षता में दिनांक 7 सितम्बर 2012 को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम – 1972 (पादप समिति) की विशेषज्ञ समिति की तीसरी बैठक आयोजित की गई। बैठक में श्री बी.एस.एस रेड्डी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, आंध्र प्रदेश एवं श्री विनोद कुमार, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, तमिलनाडु, डॉ. डी.के. सिंह, निदेशक, भारतीय वानस्पतिक सर्वेक्षण, श्री पी.बी. चेलापति राव, वन संरक्षक, वन्य जीव प्रबंधन मण्डल, तिरूपति तथा अन्य वन अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने भाग लिया। बैठक का संचालन श्री संदीप त्रिपाठी, उप महानिदेशक (अनुसंधान), भा.वा.अ.शि.प. ने किया।

परामर्शी सेवाएं

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा कर्नाटक के बेल्लारी और चित्रदुर्ग जनपदों में श्रेणी ए और बी की 50 खदानों के लिए पुनरूद्धार और पुनर्स्थापन योजनाएं तैयार कर कर्नाटक सरकार के माध्यम से माननीय सर्वोच्च न्यायालय को प्रस्तुत कर दी गईं हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इनकी प्रशंसा की है।

भा.वा.अ.शि.प. को उत्तराखण्ड में यमुना और टोंस और उनकी सहायक नदियों पर एक जल विद्युत परियोजना की एक परामर्शी परियोजना तथा हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी की तलहटी में एक ई आई ए अध्ययन परियोजना प्राप्त हुई है जिसे परिषद् द्वारा अग्रणी संस्थान के रूप में कार्य करते हुए अन्य सहयोगी संस्थानों के सहयोग से पूर्ण किया जाएगा।

भा.वा.अ.शि.प. ने ''कम्परिहेंसिव एन्वायरमेंटल मैनेजमेंट प्लान्स फॉर द माइनिंग इमपेक्ट जोन'' के निर्माण के लिए कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग और तुमकुर

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. की अध्यक्षता में हो रही हितधारकों की बैठक

जनपदों के विभिन्न हितधारकों की अनेक बैठकें की। इस योजना का उद्‌देश्य वैज्ञानिक खनन के द्वारा धारणीय आर्थिक विकास को सुनिश्चित करना तथा अवैज्ञानिक खनन के कारण प्रभावित लोगों के जीवन में सुधार करना है।

राजभाषा समाचार

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में दिनांक 7 से 14 सितम्बर 2012 को हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान

हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह के दौरान
दीप प्रज्ज्वलित करते हुए डॉ. एस.पी. सिंह, उ.म.नि (प्र.)

निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूपण, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण तथा स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समापन समारोह का प्रारंभ मुख्य अतिथि डॉ. एस.पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन) द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस समारोह में स्वरचित काव्यपाठ के आयोजन के उपरांत सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), श्री संदीप त्रिपाठी, उप महानिदेशक (अनुसंधान) सहित परिषद् के लगभग 150 अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा अन्य कर्मियों ने समापन समारोह में भाग लिया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में दिनांक 11 से 17 सितम्बर 2012 को हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। **वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट** में भी 7 से 14 सितम्बर 2012 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 3 से 14 सितम्बर 2012 तथा **शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर** में दिनांक 14 से 28 सितम्बर 2012 को हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून ने दिनांक 19 दिसम्बर 2012 को एक हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होने सरल, प्रवाहमयी और सम्प्रेषणीय हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया। उन्होने कहा कि दैनिक बातचीत में प्रयोग होने वाले अन्य भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, ऐसा करने से भाषा अधिक सम्प्रेषणीय हो जाएगी। श्री हीरा वल्लभ जोशी, हिन्दी अधिकारी, भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून प्रशिक्षण कार्यशाला के मुख्य वक्ता थे। उन्होने अपनी दूरदृष्टि तथा दशकों लम्बे अनुभव से सहभागियों को लाभान्वित किया। उन्होने सहभागियों द्वारा उठाई गई समस्याओं के साध्य समाधान सुझाए। भा.वा.अ.शि.प. के 50 से अधिक कर्मियों ने प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। व.व.अ.सं., जोरहाट में भी दिनांक 11 सितम्बर तथा दिनांक 16 नवम्बर 2012 को हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

विविध

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में दिनांक 27 जुलाई 2012 को वन महोत्सव का आयोजन किया गया। डॉ. वी. के. बहुगुणा इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उन्होने तथा निदेशक, व.अ.सं., देहरादून ने इस अवसर पर रूद्राक्ष के पौधे का रोपण किया। आफरी, जोधपुर में भी 19 जुलाई 2012 को वन महोत्सव आयोजित किया गया।

डॉ.वी.के. बहुगुणा रूद्राक्ष का पौधारोपण करते हुए

प्रथम महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प. आमंत्रण गोल्फ कप का आयोजन एफ आर आई एम ए गोल्फ कोर्स में दिनांक 17 नवम्बर 2012 को किया गया। इस आयोजन में देहरादून से 79 गोल्फ खिलाड़ियों ने प्रतिभागिता की।

वन अनुसंधान केंद्र, हैदराबाद, दिनांक 7 दिसम्बर 2012 को संस्थान स्तर पर उन्नत होकर वन जैवविविधता संस्थान बन गया है। यह संस्थान आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पूर्वी घाटों और गोवा की जैवविविधता पर ध्यान केंद्रित करेगा।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने 17वें ग्रामीण प्रदर्शन–सह–मेला "सुंदरवन कृषि मेला– ओ– लोको संस्कृति उत्सव" में 20 से 29 दिसम्बर 2012 तक भाग लिया।

17वें ग्रामीण प्रदर्शन–सह–मेला "सुंदरवन कृषि मेला–ओ–लोको संस्कृति उत्सव" में वन उत्पादकता संस्थान, रांची का स्टाल

केंद्रीय सरकार के 23 स्टालों में से वन उत्पादकता संस्थान, रांची के स्टाल को आजीविका उत्पादन के क्षेत्र में अत्यंत सराहा गया और इसे चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण एवं वन पर संसदीय समिति ने 4 जुलाई 2012 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया। समिति के अध्यक्ष डॉ. टी. सुब्बारामी रेड्डी ने भा.वा.अ.शि.प. के अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की और माननीय प्रधानमंत्री, माननीय वन मंत्री और अध्यक्ष, योजना आयोग को पत्र लिखकर परिषद् के नवीन प्रयासों के बारे में बताते हुए अतिरिक्त बजट प्रदान करने की अनुशंसा की।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण एवं वन पर संसदीय समिति व.अ.सं., देहरादून में

डॉ. आर. चिदम्बरम, पूर्व निदेशक, भाभा आणविक अनुसंधान केंद्र, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार और अध्यक्ष, वैज्ञानिक सलाहकार समिति (मंत्रीमण्डल) ने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का 7 अगस्त 2012 को दौरा किया। यहां पर उन्होने एक भाषण दिया और अधिकारियों,वैज्ञानिकों एवं छात्रों से भेंट की।

डॉ. आर. चिदम्बरम व.अ.सं, देहरादून में

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून; आफरी, जोधपुर, व.व.अ.सं., जोरहाट तथा व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 29 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2012 तक **सतर्कता जागरूकता सप्ताह** मनाया गया। इस वर्ष का विषय 'सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता' था, जिस पर निबंध इत्यादि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

डॉ.पी.पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं., देहरादून सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान शपथ ग्रहण कराते हुए

श्री शेखर दत्त, माननीय राज्यपाल, छत्तीसगढ़ दिनांक 9 अगस्त 2012 को व.अ.सं., देहरादून में पधारे। उन्होने अकाष्ठ वन उपज के बाजार भाव पर एक वेबपोर्टल www.ntfpmarketwatch.icfre.gov.in का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने परिषद् की गतिविधियां पर एक प्रस्तुतिकरण दिया।

श्री शेखर दत्त, राज्यपाल, छत्तीसगढ़ व.अ.सं., देहरादून में

वन अनुसंधान संस्थान परिसर में स्मारिका भण्डार

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वन आधारित शिल्पियों की आजीविका में सुधार हेतु उनके द्वारा निर्मित उत्पादों के विक्रय के लिए प्रेरणा स्मारिका भण्डार की वन अनुसंधान संस्थान परिसर में स्थापना की गई। इस स्मारिका भण्डार का उद्घाटन डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के करकमलों द्वारा दिनांक 3 जुलाई 2012 को किया गया।

प्रेरणा स्मारिका भण्डार का उद्घाटन करते हुए डॉ.वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

खाद्य तथा जल सुरक्षा के लिए सीमांत वनों का महत्व

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., को दिनांक 22 नवम्बर 2012 को डॉ. आर. चिदम्बरम, अध्यक्ष वैज्ञानिक सलाहकार समिति, भारत सरकार द्वारा भारत में सीमांत वन तथा खाद्य तथा जल सुरक्षा पर समिति के समक्ष विज्ञान भवन (उपभवन), नई दिल्ली में प्रस्तुतिकरण देने के लिए आमंत्रित किया गया।

प्रस्तुतिकरण के समय वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य जैसे वैज्ञानिक सचिव, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, डी.आर.डी.ओ., एम.एस.एण्ड.ई., एन.आई.ए.एस., कृषि विभागों के सचिव, आई.आई.एस.ई.आर., तथा आई.आई.एस.सी. के निदेशक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति उपस्थित थे।

प्रस्तुतिकरण में डॉ. बहुगुणा ने खाद्य तथा जल सुरक्षा के लिए सीमांत वनों के महत्व को उजागर किया। उन्होने कहा कि निम्नीकृत तथा उपेक्षित पारितंत्र के कारण अनुप्रवाह क्षेत्रों में कम खाद्यान्न उत्पादन होता है जिसके कारण गरीबी में वृद्धि, जैवविविधता का ह्रास, जल संसाधनों में कमी तथा सीमांत वनों का निम्नीकरण होता है। इसका समाधान कृषि वन, पशु, मत्स्य पालन, ग्रामीण विकास तथा बागवानी के समेकित भू–जल आधारित क्रियाकलापों का समग्र उपागम है। उन्होने सदस्यों को फकोट, उत्तराखण्ड, हिवरे बाजार, बुंदलेखण्ड माडल, संयुक्त वन प्रबन्धन में सफलता की कहानी को आजीविका के साथ संरक्षण को जोड़ने तथा फ्लेमिंजिया पर लाख कृषि के द्वारा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में गरीबी में कमी करने के लिए एक रणनीति के रुप में बताया। उन्होने बल दे कर कहा कि 85 लाख हे. जल भराव क्षेत्र तथा 32 लाख हे. सीमांत वनों में मृदा तथा जल संरक्षण उपायों, काष्ठ वन प्रबन्धनों को अपना कर काफी हद तक उत्पादकता में सुधार की आशा है तथा आजीविका अवसरों को बढ़ाया जा सकता है।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने डॉ. वी. के. बहुगुणा द्वारा दिये गये प्रस्तुतिकरण की सराहना की तथा अनुशंसा की कि क्षेत्र के महत्व को ध्यान में रखते हुए इस विषय को प्रधानमंत्री कार्यालय, योजना आयोग, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा अन्य सम्बन्धित मंत्रालयों / विभागों के समक्ष लाया जाना चाहिए।

- भा.वा.अ.शि.प. वन जैवविविधता संरक्षण और जनजातियों तथा अन्य सीमांत वन समुदायों की आजीविका में वृद्धि के लिए एफ आर ए 2006 के अंतर्गत रू. 5 करोड़ की लागत वाली एक अखिल भारतीय समन्वित परियोजना का शुभारंभ करने जा रही है। यह योजना शहद, टसर और लाख जैसे अकाष्ठ वन उपजों के द्वारा, जलागम क्षमता निर्माण, औषधीय पौधों के उत्पादन द्वारा आजीविका बढ़ोत्तरी के माध्यम से जनजातियों और सीमांत वनवासियों के सामाजिक–आर्थिक उन्नयन पर ध्यान केंद्रित करेगी।
- भा.वा.अ.शि.प. के पेंशनभोगियों के लिए नई स्वास्थ्य योजना 31 दिसम्बर 2012 को प्रारंभ की गई।

डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने स्थानीय पंचायत के सदस्यों तथा प्रगतिशील किसानों के साथ ग्राम खटनोल, तहसील सुन्नी, जनपद शिमला, हिमाचल प्रदेश में 'डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर' स्कीम के अंतर्गत दिनांक 8 सितम्बर 2012 को एक बैठक का आयोजन किया। बैठक के दौरान विभिन्न समशीतोष्ण औषधीय पौधों विशेषकर आतिश, चौरा, कुटकी इत्यादि की खेती पर जानकारी दी गई। संस्थान ने दिनांक 25 नवम्बर 2012 को खटनोल ग्राम में ही आतिश एवं चौरा की पौधशाला तकनीकों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया जिसमें 25 सहभागियों ने भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा हिमाचल प्रदेश में "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" स्कीम के अंतर्गत एक बैठक का आयोजन

वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने फ्लेमिंजिया सेमियालता के रोपण के द्वारा जीवारी ग्राम, खूंटी जनपद में दिनांक 31 अगस्त 2012 को "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" स्कीम का शुभारंभ किया।

व.उ.सं., रांची द्वारा जीवारी ग्राम, खूंटी जनपद में "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" स्कीम का शुभारंभ

वन आधारित आजीविका एवं विस्तार केंद्र, अगरतला द्वारा 5 और 6 नवम्बर 2012 को झाड़ू घास आधारित कृषिवानिकी माडल का प्रदर्शन करने हेतु एक प्रदर्शन प्लॉट की स्थापना के लिए उपयुक्त लक्ष्य समूहों की पहचान करने हेतु जन परामर्श का आयोजन किया गया। लक्ष्य समूह एक संयुक्त वन प्रबंधन समिति के सदस्य थे, जो पहले से ही उत्तर त्रिपुरा के डेपाचेरा में झाड़ू घास के व्यवसाय में संलग्न है।

अनुसन्धान खोजें

- फ्यूजेरियम प्रजाति द्वारा मेलिया डूबिया पर मूल गलन रोग पहली बार चेन्नामलई, तमिलनाडू में 6 माह के रोपण में अभिलिखित किया गया।
- अल्टरनेरिया, कुवुलेरिया तथा कोलीटोट्राइकम प्रजातियों द्वारा मेलाइना आर्बोरिया पर पत्ता तुषार रोग विल्लूपुरम तथा डिंडुगल, तमिलनाडू में राज्य वन विभाग की अनुसन्धान पौधशालाओं में पहली बार अभिलिखित किया गया।
- वन अनुसन्धान संस्थान के प्रयोगात्मक क्षेत्र में वन मौसम विज्ञानीय स्टेशन (एफ.एम.एस.) टावर द्वारा नवोदित चीड़ रोपण में ऊर्जा तथा जल बजट बनाने के लिए आधे घंटे का सूक्ष्म मौसम विज्ञान तथा सहायक आँकडे का उपयोग करते हुए "जलवायु परिवर्तनशीलता तथा भू–प्रबन्धन पद्धतियों द्वारा प्रभावित चीड़ वनों पर उर्जा तथा जल गतिकी" पर अध्ययन किया गया। इस अवधि में चीड़ के दो सक्रिय वृद्धि चरणों को विभिन्न वर्षा काल तथा छत्र प्रजातियों की सफाई सहित (वर्ष 2010) तथा बिना सफाई (वर्ष 2011) को लिया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में वन मौसमविज्ञानीय स्टेशन (एफ.एम.एस.) टावर

यह अध्ययन सूक्ष्म मौसमीय विज्ञान व्यवहार की गतिकी तथा पश्चिम हिमालय में बढ़ते हुए चीड़ पाइन तंत्र में ऊर्जा तथा जल संतुलनों के उच्च परिवर्तनशील प्रत्युत्तर तथा प्रेक्षण के दो वर्षों में छत्र प्रजातियों के प्रबन्धन की भूमिका को पहली बार रिपोर्ट करता है।

फॉरेस्टर्स मेमोरियल का शिलान्यास

वैज्ञानिक वानिकी के इतिहास में वनाधिकारियों के योगदान और बलिदान की याद में वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में एक फॉरेस्टर्स मेमोरियल का निर्माण किया जाना है, मेमोरियल का शिलान्यास डॉ. अजीज कुरैशी, माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर 2012 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में किया गया।

फॉरेस्टर्स मेमोरियल का शिलान्यास

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा संस्थानों का दौरा

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 30 जुलाई से 1 अगस्त 2012 तक उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। इस दौरान उन्होने संस्थान की विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा की तथा संस्थान में तनावग्रस्त खदानों के लिए पारि–पुनर्स्थापन उन्नत केंद्र की स्थापना की घोषणा की।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. उ.व.अ.सं., जबलपुर में

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के त्रिपुरा दौरे के दौरान 27 नवम्बर 2012 को अरण्य भवन, अगरतला, त्रिपुरा में वन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक में ''वन आधारित आजीविका एवं विस्तार केंद्र'', अगरतला की अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों पर चर्चा की गई। चर्चा के दौरान श्री एस. तालुकदार, प्रधान मुख्य वन सरंक्षक, डॉ. एन.एस. बिष्ट, निदेशक, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, श्री पी. के. कौशिक, क्षेत्रीय निदेशक, सी.एफ.एल.ई, अगरतला एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 13 दिसम्बर 2012 को रेड सेंडर्स टिंबर डिपो, कपिलतीर्थम, तिरूपति और वन्य जीव वन प्रभाग, तिरूपति का दौरा किया।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने निदेशक, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर, श्री जोसेफ, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक और श्री रघुवीर, निदेशक, आंध्र प्रदेश वन अकादमी के साथ दिनांक 11 सितम्बर 2012 को वन अनुसंधान केंद्र, हैदराबाद का भ्रमण किया। वहां उन्होने प्रशिक्षण–सह– विस्तार केंद्र की आधारशिला रखी और फॉरेस्ट टाईप्स परियोजना सहित अन्य परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प रेड सेंडर्स टिंबर डिपो, कपिल तीर्थम, तिरूपति मे

भा.वा.अ.शि.प. का उत्तरकाशी बाढ़ सहायता में सहयोग

भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा कर्मियों ने उत्तरकाशी बाढ़ पीड़ितों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हुए अपना एक दिन का वेतन सहायता कोष में दिया। महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हुए परिषद् की ओर से आपदा सहायता ले जाने वाले वाहनों को रवाना करने के लिए प्रख्यात पर्यावरणविद पदमविभूषण डॉ. सुंदरलाल बहुगुणा तथा पदमश्री डॉ. अनिल जोशी को आमंत्रित किया। इस अवसर पर डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक भा.व.अ.शि.प. तथा डॉ. पी.पी. भोजवैद, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान सहित अनेक अधिकारी, वैज्ञानिक एवं कर्मी उपस्थित थे।

उत्तरकाशी बाढ़ सहायता वाहनों की रवानगी

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. एशिया पेसिफिक एसोसिएशन ऑफ फॉरेस्ट्री रिसर्च इंस्टिट्यूशन के उपाध्यक्ष बने

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. एशिया पेसिफिक एसोसिएशन ऑफ फॉरेस्ट्री रिसर्च इंस्टिट्यूशन की छठी सामान्य सभा के दौरान चीन के ग्वांजोउ में दिनांक 31 अगस्त 2012 को सर्वसम्मिति से संस्था के उपाध्यक्ष चुने गए। डॉ. अब्दुल लतीफ मोहम्मद, महानिदेशक, वन अनुसंधान संस्थान मलेशिया, अध्यक्ष के साथ अन्य 6 कार्यकारी सदस्यों का भी चुनाव हुआ।

संरक्षक :
डॉ. वी.के.बहुगुणा, महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प.

सम्पादक मण्डल :

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार)
अध्यक्ष

श्री कुणाल सत्यार्थी, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
मानद सम्पादक

श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
सदस्य

- "वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण **www.icfre.gov.in** पर उपलब्ध है।

प्रेषकः
श्री कुणाल सत्यार्थी
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : **adg_mp@icfre.org**
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693